ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 150-151

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

बुंदेली भाषा का लालित्य एवं शब्द संपदा

1. भान सिंह यादव
2. डॉ0 सरोज गुप्ता

1. शोध अध्येता, शोध निर्देशिका– हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-31.10.2022, Revised-06.11.2022, Accepted-10.11.2022 E-mail: bhansinghyqdavtkg1988@gmail.com

सारांशः ***आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी भारतीय साहित्य, संस्कृति, आध्यात्म एवं दर्शन की जीवन प्रतिमूर्ति हैं। अपने संत स्वभाव के कारण न सिर्फ म.प्र. वरन् राष्ट्रीय स्तर पर देश विदेश में सुविख्यात हैं। सादाजीवन–उच्च विचार, साधारण रहन–सहन, उदारता, दयालुता, धार्मिक आस्था एवं भारतीय संस्कृति के जीवन्त प्रतीक हैं। ऐसे साधक तपस्वी आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी वैदिक ऋचाओं के भाष्यकार लोकभाषा मर्मज्ञ, बुन्देली व्युत्पत्ति कोशकार, अनेक ग्रंथों के रचनाकार हैं। ऐसे ही एक रचना बुंदेली शब्दो का व्युत्पत्ति कोश के अंतर्गत बुंदेली भाषा का लालित्य एवं शब्द संपदा हैं।***

बुन्देली भाषा का लालित्य एवं शब्द संपदा

कुंजीभूत शब्द–भारतीय साहित्य, संस्कृति, आध्यात्म, दर्शन, जीवन प्रतिमूर्ति, संत स्वभाव, उदारता, दयालुता, धार्मिक आस्था।

बुंदेली भाषा ललित हैं, सरस हैं, मधुर हैं, समर्थ हैं, कोमल हैं और इसमें संप्रेषणीयता हैं। भाषा विज्ञान और व्याकरणधारित हैं। अभिप्राय यह हैं कि भाषा के लिये जो सर्वग्राहा तत्व हैं, वे बुंदेली में विद्यमान हैं बुंदेली पद लालित्य प्रायः प्रसिद्ध ही हैं। बृज की बीथियों में विचरते हुये किसी बालिका का यह कथन यह कि ''सांकरी गली में माय कांकरी गड़ति हैं''। ब्रज भाषा का ललित और मधुर बचन माना जाता है, जिससे प्रभवित होकर अनेक कवि और रसिकजनों ने ब्रजभाषा को अपनी काव्य भाषा बनाया हैं किन्तु उसकी तुलना में बुंदेली के गीत के ये बोल अधिकाधिक सरस बन पड़े हैं। जब एक प्रेयसी उपालंभ देती हुई कहती है कि ''पथरीलो पिया तोरोगॉव रे, मोरी तो अनी मुरक गयी बिछिया की'' सांकरी गली में कांकरी गड़ने से पथरीलें गांव में चलने से बिछिया की अनी मुरक जाने वाला उपालंभ अधिक आत्मीय है। ब्रज की इस उक्ति में तो सांकरी–कांकरी का शब्द साम्य और अन्त्यानुप्रास ही वाक्य की सरसता ले आता है, किन्तु बुन्देली का इस बचनावली में तो हृदयतल का स्पर्श परिलक्षित होता है, अधिक आत्मीय बन पड़ा है।

ब्रज भाषा और बुंदेली– ये दोनो भाषाऍं शौरसेनी भाषा की लाड़ली बेटी हैं। दोनों में समान माधुर्य है, किन्तु ब्रजभाषा को अधिक विस्तार मिल गया, क्योंकि हमारे नटनागर की नटखट लीलाऍं जिस भूमि पर हुई, उसमें प्रचलित भाषा को भक्त कवियों का अधिक सहारा मिला। ब्रजभूमि और ब्रजभाषा भगववान कृष्ण के कारण अधिक स्पृहणीय बन गयी हैं। ठीक उसी तरह अवधी को श्रीराम की जन्मभूमि होने के कारण संत तुलसीदास जी आदि कवियों ने अवधि भाषा का माध्यम लेकर काव्यमयी और भक्तीमयी रचनाऍं की। यहीं कारण हैं कि सूरदास जी आदि अष्टछाप कवियों, वल्लभ संप्रदाय के आचार्यो एवं रसखान आदि कवियों का सहारा मिल गया और उसकी लोकप्रियता और मधुरता मे निरंतर वृद्धि होती रहीं। बुंदेखण्ड निवासी पद्माकर आदि कवियों ने भी ब्रजभाषा को ही अपने काव्य का माध्यम बनाया।

बुंदेलभूमि को कोई ऐसा चमत्कारिक व्यक्तित्व जो जन–जन का आराध्य बन गया हो, प्राप्त नहीं हुआ। अतः वह ईसुरी और गंगाधर व्यास आदि लोक कवियों की ही काव्यभाषा बन पायी।

बुंदेली सीमाऍं प्रायः नदियो से आवेष्ठित हैं। इस भूमि और भाषा को चंबल का संबल मिला, नर्मदा मैया की नरमायी मिली, यमुना की झिलमिलाती यामिनी ने इसमें चमक पैदा की, और टोंस ने झोंस बढाया, किन्तु जैसा कि सर्वविदित हैं उस युग में नद, नदी, पर्वतों के कारण यातायात और संचार माध्यमों का अभाव भी रहा, जो जहॉ का था वहीं रहा और फला–फूला विस्तार नहीं मिल पाया। भाषा और संस्कृति की भी यहीं नियति होती हैं। भाषा और संस्कृति का विस्तार आवागमन के प्रचुरता से ही होता हैं। अतः बुंदेली भूमि सीमित रह गयी और सीमित रह गयी उसकी भाषा और संस्कृति जो अपने आप में फूली–फली, बढ़ी और जीवंत बनी रही, बिना किसी आश्रयदाता के सहारे। उसका माधुर्य आज भी अक्षुण्य बना हुआ हैं और आज भी बुंदेली गद्य–पद्य पर्याप्त मात्रा में लिखा जा रहा हैं।

बुंदेली की संप्रेषणीयता– भाषा में संप्रेषणीयता का विशेष महत्व हैं, भाव संप्रेषण शब्दों के माध्यम से होता हैं। शब्दों का लालित्य उसे और अधिक सरस बना देता हैं बुंदेली के इस संप्रेषण में कुशलता और सरसता दोनों प्राप्त होती हैं, इसकी शब्द संप्रदा, कहावतें, मुहावरें और सूक्तियॉ पर्याप्त मात्रा में समुपलब्ध होती हैं। उसमें अभिधा हैं, लक्षणा हैं और व्यंजना हैं। शब्दावली रूढ़, योग्य रूढ आदि विशेषताओं से संपृक्त हैं। उदारहणार्थ पत्नी या घर की महिलाओं का बनाया हुआ भोजन अधिक स्वादिष्ट होता हैं, इस अभिधा में कहे गये कथन को बुंदेली में देखिये, ''चुरियन को तो धोंनई मीठो होत हैं''। यह भाव व्यंजना का एक श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इसी प्रकार, ''ऊंसाईलेलोपिरान, छाती पे होरा न भूंजियो''। छाती पे होरा भूंजने का भाव

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

व्यंजना हैं, जो कष्ट सहिष्णुता हैं।

बुंदेली एक समर्थ भाषा– भाषा का सामर्थ्य किस आधार पर सिद्ध होता हैं, इस संबंध में समरथ भाषा हैं, बुन्देली अवलोकनीय हैं। विद्वान लेखक ने यास्क, पतंजलि और भर्तृहरि की वाक्यपदीय गृंथो में जो समर्थ भाषा की कसोटी निर्धारित की गई हैं, उसको आधार मानते हुए बुंदेली को समर्थ भाषा सिद्ध किया हैं। अतः बुंदेली का अपना स्वयं का अस्तित्व हैं। यह ब्रज भाषा या अन्य किसी भाषा की शासिता या सहचरी नहीं। भिन्न प्रदेशों और भूभागों में बंटी हुई यह भाषा आज भी टिकी हुई हैं। यही इसका सबसे बड़ा सामर्थ्य हैं।

भाषा, विज्ञान और व्याकरण के आधार पर भी बुन्देली कोई कमतर नहीं हैं। स्वरागम, स्वरलोप, वर्णागम, वर्णलोप, वर्णविपर्यय, अर्थापकर्ष, अथोत्कर्ष आदि के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं। स्वरलोप अनाज से नाज, स्वरागम रजउ, नईया (नहीं हैं), वर्ण विस्तार कण से कनूका आदि। अर्थ परिवर्तन क्षुद्र (संस्कृत में तुच्छ नीच) खुद्रो (झगड़ें के लिये उकसाना) ऊंसे खुद्रो काय लेत। अर्थपकर्ष कल्याण भला करना बुंदेली में कल्यान (नष्ट करना) ऊंको तो कल्यानई कर डारो। पंक्ति (कतार) बुंदेली में पंगत भोज। इस क्रम में बुंदेली में अर्थ विभ्रम भी पाया जाता हैं। जैसे– वातावरण (वायुमंडल) बुंदेली में बात (वायु) बातचीत का भ्रम होने से वातावरण का अर्थ झगड़ा या झगड़े की बातचीत से हो गया। व्याकरणिक प्रत्ययों में आई, आठ, अउआ, ऐआ, एला आदि अधिक प्रयोग किये जाते हैं। जैसे– सोंजयाई, दिखाउ, बुलौआ, लिवौआ, लड़ैया, जरेला, कुटेला आदि शब्द बनते हैं।

दो अर्थ या अनेकार्थवाची शब्द– हुमसबो (पथरा नई हुमस रओ, सबरी भीत हुमस गई), जुर (जुड़ना या बुखार) चीनबो (दीवाल में चिनना या पहचानना) बूंदा (पानी की बूंदे या बैंदा सिर का आभूषण) जैसे– अंदियारी है रात भौजी को बूंदा चमक रओ, चढ़ाव (ऊंचाई या कन्या को देने वाले वस्त्र, जेबर आदि)

तीन अर्थ वाले शब्द– चलबो (कॉ चलने) अर्थात जाना। हजूरखों भोजन में का चले (भोज्य सामग्री), पोषाक चल जावे (पहनना)।

समय सूचक पर्यायवाची शब्द– सबेरा के लिए इंदियायी (सूर्योदय का समय), भुकाभुखो (अरूणोदय), भुन्सारो (सूर्योदय का बाद का समय), सबेरो (प्रातःकाल), टीकाटीकदुपरिया (जब सूर्य सिर पर आ जायें), संजा, लोलैया लगें, डिंडूबे, अथेकें।

समीपवर्ती नाम– ऐंगर, लिंगा, ढिंगा, नीरे, नजीक।

अभिवादन संबंधी शब्दावली– राम राम, जैराम जी की, पॉयलागें, डंडोत, मुजरा, पोंचे, जुडाल, आशीवर्वाद के लिए खुशी रओ जजवान, दूदन नहाओ पूतन फलो, इसी प्रकार ठकुराशी भाषा में कक्का जू, बब्बा जू साव, बउआ जू, भभ्भाजू, अबाईहोवे, विराजवोहोवे जू।

बिग्स के अनुसार– "वे शब्द देशज हैं, जिनका उद्गम संस्कृत नहीं हैं वे या तो देश के मूल निवासियों की भाषा से आये हैं अथवा संस्कृत के पश्चात् आर्यो ने ही उनका निर्माण किया।

बौद्ध काल में संस्कृत भाषा को अपभ्रंश करके उसे जनभाषा बनाने का प्रयास किया गया, क्योंकि उस समय शिक्षा के अभाव में वैदिक संस्कृत भाषा शब्द के लिये सुगम नहीं थी। बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अनुयायियों को हिंसा प्रदान यज्ञ आदि उनके विचारों को लिया था। इस प्रकार यज्ञ कर्ता ब्राह्मणो में विरोध चर्म सीमा तक पहुॅच गया जिसका प्रतीक यह श्लोक हैं–

न पठेद् याविनीं भाषा प्राथैः कण्ठगतैं रपि।
हस्तिना ताड्पमानोअपि न गच्छेज्जैविन मन्दिरम्।।

आचार्य शुक्ल ने इन्हीं भाषाओं–बोलियो का उल्लेख इस कृति में किया हैं।

निष्कर्ष– आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी के बुंदेली शब्दो का व्युत्पत्ति कोश के अंतर्गत बुंदेली भाषा का लालित्य एवं शब्द संप्रदा का विवरण भाषा विज्ञान, शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटि का हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल संपादक– डॉ. सरोज गुप्ता प्रकाशन– जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, वी 508 गली नं. 17 विजय पार्क, दिल्ली 110053.
2. बुंदेली भाषा का लालित्य एवं शब्द सम्पदा पृष्ठ क्र. 352.
3. वही पृष्ठ क्र. 355, 359.

*****